30 अगस्त 2024

क्र.	कार्यक्रम विवरण	समय
01	पंजीयन	प्रात: 09:00 से 10:00
02	उद्घाटन सत्र श्रीमती प्रतिमा बागरी जी राज्य मंत्री, नगरीय विकास एवं आवास विभाग (म.प्र.)	प्रात: 10:00 से 11:30
	प्रथम सत्र	
03	मुख्य वक्ता/कार्यक्रम अध्यक्ष भारतीय ज्ञान परंपरा के परिपेक्ष्य में व्यापार एवं वाणिज्य प्रथाएं श्री अशोक कंडेल (संचालक हिंदी ग्रंथअकादमी)	11:00 से 12:30
04	भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में व्यापार की लेखांकन ज्ञान परंपराएं तथा प्रथाएं	12:30 से 01:30 अपरान्ह
	समूह परिचर्चा	01:30 से 02:00 अपरान्ह
	भोजन अवकाश	02:00 से 03:00 अपरान्ह
	द्वितीय सत्र	
05	मुख्य वक्ता / कार्यक्रम अध्यक्ष : ''भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में व्यापार प्रबंधन की प्रथाएं एवं ज्ञान परंपराएं''	03:00 से 04:00 अपरान्ह
06	भारतीय अर्थशास्त्र एवं भारत की आर्थिक ज्ञान परंपरा, व्यापार एवं वाणिज्य प्रथाएं	04:00 से 05:00 अपरान्ह
	समूह परिचर्चा	05:00 से 05:30 सांय
	आलेख एवं शोध पत्र प्रस्तुतीकरण	05:30 से 06:00 सांय
	सांस्कृतिक प्रस्तुति	06:00 से 06:30 सांय
	आभार	

31 अगस्त 2024

क्र.	कार्यक्रम विवरण	समय
01	पंजीयन	प्रात: 09:00 से 09:30
	प्रथम सत्र	
02	भारतीय ज्ञान परंपरा के परिपेक्ष्य में भारतीय व्यापारिक विधि तथा व्यापारिक कानून परंपरा	प्रात: 09:30 से 10:30
03	भारतीय ज्ञान परंपरा के परिपेक्ष्य में व्यापार एवं वाणिज्य के माध्यम से समग्र विकास हेतु स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा पर चर्चा	प्रात: 10:30 से 01:30
	समूह परिचर्चा	01:30 से 02:00 अपरान्ह
	भोजन अवकाश	02:00 से 03:00 अपरान्ह
	द्वितीय सत्र	
04	भारतीय ज्ञान परंपरा के परिपेक्ष्य में व्यापार एवं वाणिज्य के माध्यम से समग्र विकास हेतु स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा पर चर्चा	03:00 से 04:00 अपरान्ह
05	आलेख एवं शोध पत्र प्रस्तुतीकरण	04:00 से 05:00 अपरान्ह
	संगोष्ठी कार्यशाला समाहार सत्र प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण आभार एवं समापन सत्र	05:00 से 06:00 सांय

वाणिज्य विभाग का परिचय

एकेएस विश्वविद्यालय में वाणिज्य और वित्तीय अध्ययन विभाग को अपने गतिशील अनुशासन में उत्कृष्ट शिक्षण के लिए एक प्रमुख प्रतिष्ठा प्राप्त है। हमारा शैक्षणिक कार्यक्रम उच्चतम क्षमता का है क्योंकि हम विचारों की परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास करते हैं। हमारे संकाय और विविध छात्र समूह जीवन के सामाजिक क्षेत्रों से आते हैं, सभी एक ही उद्देश्य के लिए योगदान करते हैं वाणिज्य के आर्थिक, संस्थागत और संगठनात्मक पहलुओं के अत्याधुनिक स्तर पर शिक्षा में विभाग की उत्कृष्ट प्रतिष्ठा को बनाए रखना।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक
श्री बी. पी. सोनी, कुलाधिपति
इंजी. अनंत कुमार सोनी, प्रति कुलाधिपति

संरक्षक
प्रो. हर्षवर्धन, प्रति कुलगुरु विकास
डॉ. आर. एस. त्रिपाठी, प्रति कुलगुरु प्रशासन
प्रो. विपिन ब्यौहार, संचालक, कृषि विस्तार

संयोजक
डॉ. शेखर मिश्रा (सी.ओ.ई.)
डॉ धीरेन्द्र ओझा (विभाग अध्यक्ष)

आयोजन सचिव
प्रो असलम सईद (सह अधिष्ठाता)

सह. संयोजक
डॉ. भरत कुमार सोनी

आयोजन समिति सदस्य

- ★ विपुल शर्मा
- ★ विपिन सोनी
- ★ भारती त्रिपाठी
- ★ विनीत कुमार पाण्डेय
- ★ शिवम पाण्डेय
- ★ श्रीकृष्ण झा
- ★ प्रो. एल. एन. शर्मा
- ★ दीक्षा पाण्डेय
- ★ राधा सिंह

शोध पत्र हेतु दिशा निर्देश :

'कार्यशाला के विषय एवं उपविषयों पर हिंदी भाषा में मौलिक शोध पत्र आमंत्रित हैं। ' शोध आलेख 2500 शब्दों से 4000 शब्द का होना आवश्यक है। ' शोध पत्र के लिए कृति देव फॉन्ट में 12 साइज का उपयोग करें। ' मुख्य शीर्षक के लिए कृति देव फॉन्ट में 16 साइज और बोल्ड का उपयोग किया जाएगा। ' उपशीर्षकों के लिए कृति देव फॉन्ट में 14 साइज और बोल्ड का उपयोग किया जाएगा। ' प्रत्येक शोध पत्र में कम से कम 5 कुंजी शब्द होने चाहिए जो शोध के मुख्य विषय को दर्शाते हों। ' लाइन स्पेसिंग 1.5 रखनी है और मार्जिन बाएं और दाएं दोनों ओर 1 इंच का होना होगा ।शोध आलेख में शोध मानकों का पालन अनिवार्य रूप से करें।

शोध आलेख ई मेल commerce@aksuniversity.com पर
दिनाँक 28 अगस्त, 2024 तक भेजना सुनिश्चित करें।
ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथि: 28 अगस्त 2024
Google form link & QR Code
https://forms.gle/TDTA29kZoa6ger9D7

कार्यशाला हेतु संपर्क
डॉ. धीरेंद्र ओझा : 9329298854
डॉ. असलम सईद : 9039141242

एकेएस विश्वविद्यालय
सतना (म.प्र.)

भारतीय ज्ञान परम्परा, सामाजिक समरसता एवं समृद्धि के संदर्भ में वाणिज्य विषय के अंतर्गत

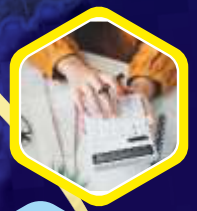

दो दिवसीय
राष्ट्रीय कार्यशाला
30-31 अगस्त 2024

युगों युगों से सतत्
व्यापार और वाणिज्य प्रथाएं

आयोजक
वाणिज्य संकाय
एकेएस विश्वविद्यालय, सतना
शेरगंज पन्ना रोड, सतना (म.प्र.)

वाणिज्य विषय में भारतीय ज्ञान परम्परा

मध्यकाल में भी भारतीय वाणिज्यिक परंपरा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दिल्ली सल्तनत और मुगल काल में व्यापारिक गतिविधियाँ बहुत व्यापक थीं। मुगलों ने व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और कर प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए कई कदम उठाए। उस समय भारत से कपास, रेशम, मसाले और जड़ी-बूटियों का निर्यात बड़े पैमाने पर होता था। भारतीय जीवन शैली एवं हमारी संस्कृति तथा 16 संस्कार पर अटूट श्रद्धा एवं तिथि त्योहारों का हमारी अर्थव्यवस्था से सीधा संबंध रहा है।

भारत की वाणिज्यिक परंपरा न केवल आर्थिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रही है। यह परंपरा सदियों से न केवल भारत की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती आई है, बल्कि वैश्विक व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के युग में भी भारतीय व्यापारिक परंपरा की धरोहर अपने पूर्ण वैभव के साथ जीवंत है और आगे भी यह विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाए रखने में सक्षम है।

प्राचीन भारत में व्यापारिक मार्गों का अत्यधिक महत्व था। 'सिल्क रूट' और 'स्पाइस रूट' जैसे मार्गों ने भारत को एशिया, यूरोप और अफ्रीका से जोड़ा। ये मार्ग न केवल वस्तुओं का आदान-प्रदान करते थे, बल्कि सांकृतिक और वैचारिक विनिमय का भी माध्यम थे। उदाहरण के लिए, भारत से मसाले, रेशम, हाथीदांत, कपास, मोती, और विभिन्न कीमती पत्थरों का निर्यात किया जाता था, जबकि सोना, चांदी, और अन्य धातुएँ आयात की जाती थीं। इसके साथ-साथ शिक्षा एवं औषधि विज्ञान तथा वाणिज्यिक अर्थशास्त्र ज्ञान का पूर्ण आदान-प्रदान होता था ।

मनुस्मृति, अर्थशास्त्र, और कौटिल्य नीति जैसे ग्रंथों में व्यापार, बाजार, मुद्रा, और अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में व्यापारिक नीति, कर प्रणाली, और वित्तीय प्रबंधन के विस्तृत सिद्धांत दिए गए हैं। कौटिल्य ने आर्थिक समृद्धि के लिए 'व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा' और 'कर प्रणाली में पारदर्शिता' पर बल दिया था। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने उल्लेख किया है कि एक सक्षम शासक को व्यापारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए और कर प्रणाली को सरल और न्यायसंगत रखना चाहिए।

गुप्त काल (लगभग 320-550 ईस्वी) को भारत का स्वर्ण युग माना जाता है, जब व्यापार और वाणिज्य अपने चरम पर थे। उस समय भारत का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) विश्व का लगभग 33% था, जो इस बात का सूचक है कि भारत की वाणिज्यिक गतिविधियाँ कितनी महत्वपूर्ण थीं। भारतीय व्यापारी समुद्री मार्गों का उपयोग करके रोम, ग्रीस, मिस्र, और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे देशों के साथ व्यापार करते थे। कौटिल्य के अनुसार, उस समय भारत में लगभग 18 प्रमुख व्यापारिक मार्ग थे जो विभिन्न शहरों और बंदरगाहों को स्थानीय बाजार, हाट, और मेले से जोड़ते थे जो भारतीय वाणिज्य का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। ये न केवल व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र थे, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक मेलजोल के भी स्थल थे। आज भी भारत में साप्ताहिक हाट और वार्षिक मेले लगते हैं, जो प्राचीन परंपराओं का ही आधुनिक रूप हैं।

कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो. बी.ए. चोपड़े
कुलगुरू, एकेएस विश्वविद्यालय

मुख्य वक्ता

प्रो राजेश वर्मा
कुलगुरु, रानी दुर्गावती वि.वि. जबलपुर

विषय विशेषज्ञ

सी.ए. अमित राव
पूर्व प्रचार्य, एम.जे. महाविद्यालय, जलगांव

प्रो आर. के .आचार्य
कुलगुरू, ए.पी.एस.यू., रीवा

प्रो भरत मिश्रा
कुलगुरू, ग्रामोदय वि.वि., चित्रकूट

प्रो. अनिल धगत
कुलगुरू, छतरपुर विश्वविद्यालय

प्रो. पवन मिश्रा
अध्यक्ष, केन्द्रीय शिक्षण मण्डल, वाणिज्य

प्रो. संजय शंकर मिश्रा
विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
टी. आर. एस. महाविद्यालय, रीवा

प्रो. आर. पी. गुप्ता
अध्यक्ष, राज्य शिक्षण मण्डल, वाणिज्य

डॉ. बी. एम. एस. भादौरिया
सदस्य केन्द्रीय अध्ययन मंडल

प्रो. जितेन्द्र शर्मा
प्राचार्य एवं विभाग अध्यक्ष, अग्रसेन इंस्टिट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज एंड रिसर्च, सिकंदराबाद

प्रो. एस. के. भराल
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

प्रो. धीरेन्द्र तिवारी
पूर्व कुलपति, विश्वविद्यालय,
आरा, बिहार

डॉ. अभय जैन
सह. प्रध्यापक, श्री राम
कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली

प्रो. वंदना गोटे
प्रो. बी.आई.एम.एम. पुणे

प्रो. प्रमोद कुमार
दयाल बाग विश्वविद्यालय, आगरा

सी.ए. संजय सिंघई
आईसीएआई

प्रो. अरूण कु. गौतम
प्राचार्य शा. महाविद्यालय, मैहर

सी.ए. अभिजीत केलकर
क्षेत्रीय परिषद सदस्य, इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड
अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (ICAI)

कार्यशाला में विमर्श हेतु प्रस्तावित बिंदु

- सदियों से सामाजिक कल्याण और वाणिज्यिक गतिविधियाँ प्राकृतिक संतुलन और सदियों से चली आ रही हमारी व्यापार पद्धतियाँ
- सदियों से भारतीय लोकाचार और संसाधन अनुकूलन (अन्वेषण) प्रणाली।
- सदियों से व्यावसायिक गतिविधियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्य प्रणाली।
- सदियों से वैश्विक बाजार में विपणन और बिक्री की भारतीय शैली
- सदियों से व्यावसायिक गतिविधियों और श्रम विभाजन की भारतीय पद्धतियां।
- सदियों से व्यावसायिक गतिविधियों में लगे कारीगरों और अन्य मानव संसाधनों की स्थिति।
- भारतीय वाणिज्यिक प्रणाली और आर्थिक समृद्धि, राष्ट्रीय अखंडता और सदियों से आम आदमी का कल्याण।
- हमारे धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान और युगों-युगों से हमारे व्यापार और वाणिज्य पर इसका प्रभाव।
- सदियों से व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों का नियंत्रण और शासन प्रणाली।
- वैदिक अर्थशास्त्र वेदों में व्यवसाय, अर्थनीति और धन व्यवस्था के विचार।

एकेएस विश्वविद्यालय का परिचय

एकेएस विश्वविद्यालय (एमिकेबल नॉलेज सॉल्यूशन) सतना, मध्य प्रदेश शासन तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त भारत का निजी विश्वविद्यालय है। यह विंध्य और महाकौशल क्षेत्र के निजी विश्वविद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना एमपी विधानमंडल अधिनियम संख्या 44 के तहत की गई थी, जिसे 23 नवंबर 2011 को पारित धारा 2 (एफ) के तहत विधिवत मान्यता प्राप्त है। एकेएस विश्वविद्यालय राजीव गांधी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन की एक पहल है

सतना शहर का परिचय

सतना शहर के बारे में सतना को भारत की सीमेंट राजधानी के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि सतना और उसके आसपास भारी मात्रा में चूना पत्थर जमा है, और बिड़ला समूह, जेपी समूह, रिलायंस समूह, प्रिज्म समूह सहित हर प्रमुख सीमेंट खिलाड़ी ने अपने सीमेंट संयंत्र स्थापित किए हैं। प्रमुख कोलकाता-मुंबई मार्ग पर सतना में 150 वर्ष से अधिक पुराना रेलवे स्टेशन है। पन्ना वन अभ्यारण्य मध्य भारत में सबसे अधिक जैव-विविधता वाले स्थलों में से एक के रूप में जाना जाता है, साथ ही 100 साल से अधिक पुरानी पन्ना हीरे की खदानें भी हैं। मौजूदा हवाई पट्टी से परे आधुनिकीकरण के साथ आगे बढ़ते हुए, सतना ने कई सफल राजवंशों द्वारा प्रदान की गई अपनी प्राचीन पारंपरिक महिमा को बरकरार रखा है। सतना के 30-100 किलोमीटर के भीतर अन्य प्रमुख स्थान रीवा शहर हैं, जो सफेद बाघ का घर है मैहर शहर, जो पिछले सैकड़ों वर्षों से शास्त्रीय संगीत के वार्षिक अखिल भारतीय उत्सवों के लिए प्रसिद्ध है और पहाड़ी की चोटी पर देवी शारदा का राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध मंदिर है, जो अब रोपवे से जुड़ा हुआ है। चित्रकूट भी सतना जिले में है, जो एक आध्यात्मिक और प्राकृतिक स्वर्ग है, यह शहर हिंदू पौराणिक कथाओं में डूबा हुआ है, जहां भगवान राम ने लगभग 12 वर्षों के अपने वनवास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बिताया था।